मेजर लल्लन सिंह

सन चौरासी मे मैं कलकत्ता अपना पासपोर्ट बनवाने गया हुआ था। सुवह की एक गाड़ी से धनबाद वापस आ रहा था। अचानक मुझे मेहरूनिसा की याद आई। अपने परिचय मे उन्होने खुद ही तो बताया था कि वो गाजीपुर की रहने वाली हैं.लेकिन अब शाहजहाँपुर मे रहती हैं। सुवह के चार बज रहे थे। अभीं पौ भी नही फटा था। स्टेशन के बाहर एकाध चाय पान की गुमटियॉ खुल चुकी थीं। उनके चूल्हों से निकलता धुऑ फैले कोहरे को और भी घना किये जा रहा था। रिकसेवाले कान तक कम्बल चढाये अपने अपने रिकसों पर सो रहे थे। पॉच दस टमटमवाले भी नज़र आये। अपने मरियल घोड़ों को टमटम से बॉध कर स्वयम टमटम के नीचे गुथड़ियों पर सो रहे थे। आस पड़ोस मे बसे दलाल अभीं तक जगे नही थे.वरना अब तक तो मुझे सैकड़ों घेर लिये होते। अपने दोस्तों से मुझे सुनने को मिल चुका था कि शाहजहॉपुर मे नाचने गाने वाली वाईयॉ अमूमन दुल्हनपुर मे रहती हैं। धन्धे वहॉ भी होते हैं.पर दस वीस टाका वाले नही। हजारों गिनने पड़ जाते हैं। दुल्हनपुर की वाईयॉ अपनी सेवायें भी कलकत्ता या आसनसोल के अच्छे होटलों मे दिया करती हैं। जीवन मे पहली बार मै इस स्टेशन पर उतरा था। अन्दर से मन घबरा रहा था। थोड़ा डर सा भी लग रहा था। हिम्मत संजो कर एक रिकसेवाले को जगाया और उसे किसी तरह बन्गाली मे ही बताया कि मुझे दुल्हनपुर जाना है।

तपाक से बोल पड़ाःएई काम को वास्ते इतना दूर क्यों!वीस टाका लागवे। सोमीप मे एक से एक भालो कम उम्र का लेरकी लोग रहता है।

जैसी टूटी फूटी बन्गाली मै बोल लेता था.वैसी ही टूटी फूटी हिन्दी वो रिकसावाला भी बोल लेता था। किसी तरह मैने उसे समझाया कि मै इन वातों के लिये यहॉ नही आया हूँ। मुझे दुल्हनपुर मे मेहरूनिसा नामके एक वाई से मिलना है।

ःपोता ठिकाना!

ःवो सब मेरे पास नही है।

ःउसताद या सोरपारोस्त का नाम!

ःपता नही

फिर वो आनाकानी करने लगाःइतना रात मे कोई रोकोम आमि बिना पता के आपनार मेहरूनिसा के ढूँढते पारवि!

ःअरे यार पहले चलो तो। पूछताछ कोरते होवे। कर लेगें। एई पूछताछ कोरते ताखते आमार के ईश्वर मिली गेलो अउर तुमि ड्रामा कोरछे।

ःपोचास टाका लागवे!

ःभालो! तुमी पावो.पर मेहरूनिसा से मिलवाने के वाद।

न जाने किन किन उवड़ खावड़ रास्तों को पार करता हुआ मेरा रिकसा वाला मुझे एक बस्ती मे ले आया। थोड़ा बहुत कोहरा फटने को आया था। एक बरामदे मे अलाव जल रहा था.जिसे घेरे तीन चार लोग कम्वल ओढे बैठे थे। बरामदे के सामने कई कुत्ते भी पसरे हुए थे। हमे देखते ही वो जागे और भोंकते हुए हमारी ओर आये। दूर्र दूर्र करते हुए रिकसेवाला अपने दोनो पैर पैडल से हटा कर हैन्डल पर रख लिया और कहने लगाःएई बोन्गाल वीच सौव भूखा। इन्सान भूखा.जानवर भूखा.कुत्ता भूखा। सौब एक दूसरा को जिन्दा खाने को तैयार।

मै भी अपने पैर समेट कर सीट पर रख लिया था। ये कुत्ते भूखे शेर की तरह हम पर गुर्रा रहे थे।

ःजाके सामने पूछो न!शायद उनसे मेहरूनिसा का पता मिल जाये।

ःआमि नाई जावो। एई कूकूर लोग हमको खा जायेगा।

रिकसे पर बैठे ही बैठे मैने आवाज लगाईःतुमलोगों मे से कोई उठ कर हमारे पास क्यों नही आता!

कई बार आवाज लगाने पर एक बूढा उठा। उसकी एक डपट पर सारे कुत्ते शान्त हो गये। उसने एक भेड़ो की कम्वल ओढ रखी थी।

ःहिन्दी उर्दू समझ लेते हो!

ःजी हॉ!

ःइस बस्ती मे मेहरूनिसा रहती हैं। उनका पता बता सकते हो!

ःकौन मेहरूनिसा!इस नाम की तो कई हैं यहॉ!

ःवो गाजीपुर की रहने वाली है!

ःगाजीपुर की तो यहॉ कई हैं। मै खुद गाजीपुर का रहने वाला हूँ।

ःतुम इस बस्ती मे कब से रहते हो!

ःजमाना हो गया हुजूर।

ःफिर तो तुम ये भी जानते होओगे कि मै जिन मेहरूनिसा को ढूँढ रहा हूँ.वो बनारस के एक मेजर साहब की चाहता रही हैं। कई वर्षो पहले की वाते हैं। मेजर साहब तो नही रहे.पर शायद वो आज भी जीवित हों!

ःउनकी उम्र क्या होगी हजूर!

ःपूछा तो उनसे कभीं नहीं.पर अनुमानतः यही कोई पच्चास के आस पास

ःएक मिनिट हजूर!शायद मै उन्हे जानता हूँ.पर गलती भी हो सकती है। वो सामने से जो सड़क वॉई ओर जाती है.उस पर ग्यारहवॉ या वारहवॉ मकान शायद उन्ही का है। पूछ के देख लीजिये। हाल ही मे छत पर नया खपरैल चढा है।

वो सामने की सड़क आने का नाम ही न ले रही थी। रह रह कर मै मेहरूनिसा से अपनी पहली मुलाकात मे खो जाता था। ये एक अजीव सी वात थी कि मै चाह कर भी उन्हे कोई दूसरा नाम नही दे पाया था। उन्हे मै मेहरूनिसा के नाम से भी नही बुला सकता था। मै ये भी नही जानता था कि अचानक उनसे मिलने की इच्छा मेरे मन मे क्यों जागी थी!उन्ही की वजह से मेजर साहब ने आजीवन अविवाहित रहने का फैसला तो नही ले लिया था!मेजर साहब के पद से अगर देखा जाये.तो वो मेरी चाची लगती थीं.पर मै उन्हे ये पद देना नही चाहता था। मुझे इन बातों से बड़ी चिढ होती थी। सम्बन्ध वने बनाये होते हैं। वो न तो बॉटने के लिए होते हैं और न तो लादने के लिए।

न जाने कब यकायक सारा मुहल्ला जाग चुका था। हर घरों के बरामदों मे एकाध औरतें और बच्चे अलसाई मुद्रा मे खड़े उत्सुक निगाहों से मुझे देखे जा रहे

थे।हमारे रिकसे को घेरे आठ दस कुत्ते भी दौड़ रहे थे।बस्ती के कई बच्चे रिकसे के पीछे झूल भी रहे थे।सड़क के दाहिनी तरफ दूर सुदूर तक फैले खेतों मे मकई की फसलें लहलहा रही थीं।उनके पत्तों पर ओस की बड़ी बड़ी बूँदें दूर से भी देखी जा सकती थीं।

मेरे सामने एक खपरैल का पक्का मकान खड़ा था।इसके पास अलग से अपना एक घेरा भी था।रिकसे से उतर कर फाटक पर आया ही था कि वरामदे मे बने एक कमरे से एक बूढा मुसलमान निकल कर वाहर आया और मुझसे पूछाःकिससे मिलना है आपको!

ःमेहरूनिसा से।ये उन्ही का मकान है न!

ःमकान तो उन्ही का है.पर उनसे किस सिलसिले मे मिलना है!

ःउनसे आप जा कर कह दें कि उनसे मिलने भोजापुर का एक लड़का आया हुआ है।

न जाने कितनी बार ये बूढा मकान के अन्दर गया और फिर से एक नया सवाल लिये दुबारा वापस आया।फाटक की सिकड़ी पर अभीं भी एक मुर्चीला ताला झूल रहा था।मकान के अन्दर की मेहरूनिसा न तो भोजापुर का नाम कभीं सुनी थी.और न ही वो किसी मेजर लल्लन सिंह को जानती थीं।वो धनवाद भी कभीं किसी मूजरे मे नही गई थीं।मै लगभग निराश हो चला था।अन्त मे वूढे को ये कह कर अन्दर भेजा कि उन्हे जा कर ये तो वताओ कि उनसे मिलने प्रमोद आया हुआ है। ये मेरा आखिरी और सबसे कमजोर प्रयास था और यही सफल हुआ।ये मुझे आज भी अविश्वसनिय लगता है।

प्रमोद नाम सुनते ही अपनी साड़ी मे उलझती लिपटती बेतहाशा भागती फाटक तक आई थीः

आनन फानन फाटक का ताला खोल कर मुझे अपने कलेजे से लगा लीं।उनकी ऑखों मे ऑसुओं के सोते फूट चले थेःलल्लन जी ठीक ही कहते थेःमेहरू! तुम्हे दुनिया भले ही भूल जाये.प्रमोद तुम्हे नही भूलेगा।वहुत सेन्टिमेन्टल लड़का है।

ःदेखते ही देखते इतने बड़े हो गये बाबू!

ःलल्लन जी के गुजरने के बाद मै एक दम से अकेली रह गई।कोई अपना नही रह गया।

मै आगे बढा और उन्हे समेट कर अपनी वॉहों मे ले लिया।उनके कन्धे पर सर रख कर पहली बार लल्लू चाचा की याद मे सूबकने लगा।लल्लू चाचा मेरे जीवन मे उन व्यक्तियों मे से थे.जिनसे मुझे अपने यौवनारम्भ मे एक मान्यता जैसी चीज मिली।इस संवेदनशील अवस्था मे अमूमन हमे नकारा जाता है।इस नकारने की वजह से हम इसी अवस्था मे अपने जीवन की अक्षम्य गलतियॉ करते हैं और अपने माता पिता और सगे सम्बन्धियों का दिल दुखाते हैं।इस अवस्था का टूटा फिर कहॉ जूड़ पाता है!इस अवस्था का पाया लल्लू चाचा के रूप मे जीवन की अनमोल निधि बन जाता है।

भोजापुर मेजर लल्लन सिंह की लाश एक सिक्ख कैप्टन ले कर आया था।उसके संग दो फौजी जवान भी थे।किसी निरीक्षण मे मेजर साहव ने एक सिक्ख जवान की पगड़ी मार कर गिरा दी थी।मौका पाकर एक दिन शाम को वो अपनी संगीन पीछे से उनकी कमर मे भोंक दिया।उन्हे बचाया नही जा सका।चौआलीस वर्ष की अवस्था मे करमजली का ये सपूत हम सबसे विदा ले लिया।दो युद्धों मे भाग लेने वाले इस जीवट सिपाही की किस्मत मे बीरों की मौत नही लिखी थी।भोजापुर मे ही नही.बल्कि पूरे चन्दौली मे हाहाकार सा मच गया था।देखते ही देखते न जाने कहॉ कहॉ से सैकड़ों ट्रैक्टर आ कर भोजापुर मे जमा हो गये थे।वर्फ की सिल्लियों पर उनकी लाश एक खुली जीप पर एक मुँहखुले वक्से मे रखी हुई थी।जीप की खुली छत न जाने कितने गेन्दे के फूलों की मालाओं से आच्छादित थी।गुलाबों की न जाने कितनी पंखुड़ियॉ उनकी लाश पर बिखरी पड़ी थीं।जीप को एक नई नवेली दुल्हन की तरह सजाया गया था।भोजापुर गला फाड़े रोये जा रहा था।इस सपूत ने न सिर्फ पूरे प्रदेश मे.बल्कि सारे देश मे भोजापुर का नाम उजागर करके रख दिया था।उनकी लाश चन्दौली आई.जहॉ हजारों लोग उनकी अगवानी मे खड़े थे।वो बिना कहे सुने ट्रैक्टरों की काफिला के पीछे जा खड़े हुए।चन्दौली की पावन भूमि पर अब तक न जाने कितने सपूत आये और गये.पर मेजर लल्लन सिंह जैसे सपूत की विदाई उसे बड़ी दुखदाई लग रही थी।मेजर साहब को जिसने भी एक बार दूर या समीप से देखा था या फिर उनके बारे मे सुना था.उन्हे याद करते ही ऑसुओं की झड़ियों मे डूब जाता था।लोग मुँह फाड़ फाड़ कर.राग पा पा कर बिलख रहे थे।जीप की बोनट थामे मै भी आगे बढा जा रहा था।रह रह कर मेजर साहब का कहाःकैसे हो बेटे!इस भोजापुर की तुमसे न जाने कितनी आशायें बँधी हैं!इस गरीब मॉ का नाम तुम्हे ही रौशन करना हैःमुझे याद आ रहा था।मेहरूनिसा का कहाःखुश रहो बाबू! रह रह कर मुझे धनवाद के कम्पाऊन्डर साहब की कोठी तक घसीट ले जाता था।

उनका पैर छूने झुका ही था कि वो बढ कर मुझे अपने कलेजे से लगा ली थींःखुश रहो बाबू!लल्लन जी मुझे बताये कि तुम मुझसे मिलने आये हो.तो मेरी खुशियों का कोई ठिकाना ही न रहा।आओ मेरे पास बैठो और अपने बारे मे मुझे भी कुछ बताओ।शाम के खाने पर रूक पाओगे न!एक बेहद साफ सूथरी जमीन के इन्सान हो तुम।कितना सुदर्शन तुम्हारा मुखड़ा है!नजर हटाने का मन ही नही करता।वो जिस मुखड़े की बड़ाई कर रही थी.उस पर बेतरतीब घासों की तरह दाढी मूछ उगने को आई थीं।सारे चेहरे पर न जाने कितने दाने उग आये थे।सीसे की तरफ देखने तक का मन नही करता था।धईया का ही एक नाई मना करने के बावजूद मेरे सिर के बाल रंगरूटों की तरह काट गया था।फिर भी न जाने क्यों उन्हे मेरा मुखड़ा सुदर्शन लग रहा था!

अपने बारहवें वर्ष की उम्र मे अब तक इस तरह का सौन्दर्य मुझे इससे पहले कभीं भी नही टकराया था।वो मेरे जीवन की पहली मुसलमान महिला थीं।बात चीत करने के तौर तरीके या फिर दूसरी अदायें तो कोई जा कर मुसलमान औरतों से सीखे।बड़ी नफासत है उर्दू मे।एक शादीसुदा जीवन से कहीं मुझे लल्लू चाचा और मेहरूनिसा का अविवाहित जीवन लाख दर्जे बेहतर लगा।रोजमर्रा के जीवन मे आये दिन जिस प्यार का हम गला घोंटते रहते हैं.उसे इन लोगों ने कितनी सफाई से वचा कर रखा था।एक दूसरे के प्रति उनके सम्बोधन और उसके खिलाफ उनकी प्रतिक्रियायें सुन्दर गीतों की तरह हवा मे लहराते थे।जीवन के तीसरे चौथे दशक मे इस तरह के सुन्दर गीत कहॉ सुनने को मिलते है!प्यार खिसक कर न जाने कहॉ मात्र बन्धनों मे खो जाता है!

लल्लू चाचा धनवाद छत्तीस विहार बटालियन के उदघाटन पर आये थे।उन्हे कम्पाउन्डर साहब की कोठी मे ठहराया गया था.जिसके निचले तल्ले पर इस बटालियन के चार हवलदार रहते थे।सन बासठ की युद्ध मे उन्हे अपनी वीरता के लिए वीरचक्र प्रदान किया गया।उनकी पदोन्नति करके उन्हे कैप्टन बना दिया गया।उत्तर प्रदेश के दैनिक आवाज मे उन्हे पूरे प्रदेश का सपूत कहा गया।उनकी तश्वीर भी अखबार मे छपी थी।बनारस मे ही उनके नाम पर इस अखबार की लाखों प्रतियॉ विकी थीं।भोजापुर का ये शेर तहलका मचाके रख दिया था।अपने देश का शायद ही कोई अखबार रहा होगा.जिसमे राजपूत बटालियन के कैप्टन लल्लन सिंह का नाम न आया हो।काश! ये सब उनकी मॉ भी देख पातीं।

हमारे स्कूलों मे एन सी सी आ चुका था और मिलिट्री साईन्स को एक अतिरिक्त विषय का दर्जा हासिला हो चुका था।सन बासठ की युद्ध मे हमारे लाखों जवान खेत आये थे।हमारी तमाम जमीनें चीन ने हॅथिया ली थीं।आजादी के वाद हम ढंग से स्थिर नही हो पाये थे और जवाहर लाल नेहरू अपनी अर्न्तराष्ट्रीय ख्याति हासिल करने मे जा लगे थे।गान्धी ने हमे असहयोग और अहिंसा के नाम पर आजादी दिलवाई थी।हम पर फिर से कोई हमला न कर बैठे.नेहरू पंचशील के नाम पर सारी दुनिया मे अपने देश की गुहार लगा रहे थे।

सन बासठ की पराजय के वाद उन्हे अपनी नाक जो वचानी थी।अर्न्तराष्ट्रीय कर्ज लेकर उन्हे अमेरिका से अनाप शनाप हॅथियार खरीदे.एन सी सी की स्थापना की

गई।उनके आहवान पर देशभक्ति के गीत लिखे गये।फिल्मी गायकों ने उन्हे गाया।दिग्दर्शको ने देशभक्ति पर फिल्मे बनाई।सोई जनता एकबारगी जाग उठी।वाह रे नेहरू और पटेल की सरकार!कितनी सफाई से ये बुर्जुवा खद्दड़ का कुर्त्ता पैजामा और कांग्रेसी टोपी पहन कर देश का शासन अपने हॉथों मे ले लिए थे!

इन्डियन स्कूल माईन्स के परिशर मे अन्ग्रेजों का एक बहुत ही पुराना शस्त्रागार हुआ करता था।एक बहुत ही बड़ा लकड़ियों का गोदाम।इसके फर्श पर न जाने कितनी मोटी धूल की पर्त्त आ जमी थी.जिस पर मोटे मोटे गिरगिट रेंगते रहते थे।दुनिया भर के चमगादड़ इस गोदाम मे आ बसे थे।मोटे मोटे मकड़जाले सारे गोदाम मे लटके हुए थे।इसके दरवाजे और खिड़कियाँ तो न जाने कब के सड़ गल चुके थे।एकाध रौशनदानों के सीसे साबूत थे.जिन पर चौकीदारो और क्लर्को के स्कूल से वापस आते लड़के पत्थर फेंका करते थे।ये गोदाम किसी भूतहे महल से कम न था।

बड़े जोर शोर से इस गोदाम की मरम्मत शुरू हो गई।लकड़ी के दीवारों की वार्निश की गई।पूरी छत बदली गई।नया लकड़ी का फर्श बिछाया गया।नये दरवाजे लगे.नई खिड़कियॉ बनी।इसके अहाते को सफेद सिमेंट से पक्का किया गया।कॅटीले तारों से इसके अहाते को घेरा गया।सैकड़ो सिमेन्ट के गमले खरीदे गये।गोदाम के ठीक सामने एक छोटे से घेरे मे एक लकड़ी का मंच बना।इस घेरे मे छोटे छोटे सफेद चिकने समुद्री पत्थर बिखराये गये।मंच के पीछे दो सफेद खम्भे गाडे गये।जब ये सब कुछ बन कर तैयार हो गया.तो ये किसी छावनी से कम न दिखता था।इस बटालियन के छ हवलदार.दो सूबेदार और एक सेकेन्ड लैफ्टिनेन्ट धनबाद मे आ चुके थे।इन्ही हवलदारों को धनबाद के हायर सेकेन्ड्री स्कूलों मे जा जा कर सावधान विश्राम और कदमताल सीखाना था।इन हर स्कूलों मे वहीं के किसी टीचर को अवैतनिक और अतिरिक्त एन सी सी टीचर का कार्य भार सौंपा जा चुका था।

धईया मे हमारे घर के समीप ही एक कम्पाऊन्डर साहब की दो मंजिली कोठी हुआ करती थी।जब इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के प्रसार के लिए केन्द्रीय सरकार ने धईया की जमीने खरीदनी शुरू कीं.तो उन्हे अपनी ये कोठी छोड़नी पड़ी।अब ये कोठी यूँ ही खाली पड़ी थी।इसकी भी सफाई शुरू हो गई।इसकी नीचली मंजिल पर चार हवलदार रहने लगे थे।

आठ जनवरी उन्नीस सौ तिरसठ को एन सी सी ऑफिस का उदघाटन होने वाला था।कैप्टन लल्लन सिंह भी दो दिन पहले धनबाद आ चुके थे।आते ही वो हमारे घर आये।भेंट के तौर पर वो एक पीतल का फूलदान लाये थे।पैदल ही आये थे।उनके आने से पिताजी का सम्मान बहुत बढा था।घर के सामने वाले रास्ते पर हर आने जाने वाला हमारी फैन्सिंग पर उचक कर हमारे बरामदे की ओर झॉक लेता था।वो मेरे लिए भी चॉक्लेट का एक डिब्बा लाये थे।इन चाक्लेटों के एकाध रैप्स कई वर्षो तक मेरे साथ रहे।उन्हे मै उपन्यासों के पढे पन्नों के बीच दबा कर रखा करता था।

उदघाटन के दिन वहॉ आने का निमंत्रण धनबाद के डी एम.इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के निदेशक.धनबाद के नामी गरामी एडवोकेटस.उद्दोगपति.खदानो के मालिक.झरिया के राजा साहब और हमे भी मिला हुआ था।ठीक गोदाम के पीछे एक शानदार शामियाना बनाया गया था जिसकी सजावट देख कर मन खुश हो जाता था।सभी के बैठने के लिए आरामदेह कुर्सियॉ मॅगवाई गई थीं।खास मेहमानों के लिए सोफे का भी प्रबन्ध था।नाश्ते पानी का इन्तजाम पुराने बाजार के गेलार्ड रेस्त्रॉ को सौंपा गया था।

सबसे पहले कैप्टन लल्लन सिंह मंच पर छत्तीस बिहार बटालियन का पहचान ताज सजाये।इस ताज को पीतल के ब्रासो से इतना चमकाया गया था कि उस पर सूरज की किरणें तक पड़ने से घबराती थी।तिरंगे का उत्तोलन डी एम साहब के हॉथों हुआ.पर बटालियन के झन्डे को कैप्टन साहब ने फहराया।फिर घन्टों भाषणबाजी हुई।एन सी सी की स्थापना और उसके ध्येय के बारे मे बताया गया।चाचा नेहरू की स्तुति गाई गई।कॅटीली फैन्सिन्ग पर न जाने कहॉ कहॉ के लोग आ जमे थे!कई राजा झरिया को देखने आये थे.तो कई सितारों से टॅकी वर्दी पहने कैप्टन लल्लन सिंह को।चनचनी.व्होरा या फिर जेठवा परिवार की लड़कियॉ अपने तंग कुर्त्ते पिजामे मे बम्बई की अभिनेत्रियों के कान काट रही थीं।रह रह कर वो अपनी नजरें भींड़ पर डाल देती थी।कईयों के मुँह से तो आहें निकल जाती थीं।कैप्टन साहब भी अपनी वर्दी मे किसी फिल्म अभिनेता से कम नही लग रहे थे।कई शादीसुदा औरतें अपने पतियों से नजरें बचा कर उन्हे अपनी मुस्कानें अर्पित कर देती थीं।

शामियाने के नीचे एक लम्बी सी मेज पर गेलार्ड के बेयरे समोसे.जलेबियॉ सन्देश.बर्फियॉ और न जाने क्या क्या सजाये जा रहे थे!चाय.कॉफी की बड़ी बड़ी थर्मसें आई हुई थीं।उनमे नलके भी लगे हुए थे।न जाने कितने प्रकार के जूस जगो मे भरे हुए थे!एक खम्भे से बन्धे लाऊडस्पीकर के चोंगे पर फूल वाल्यूम मे एक से एक देशभक्ति के गाने बज रहे थेःलता मंगेशकर के ःऐ मेरे वतन के लोगों ःसे लेकर मोहम्मद रफी कीःआवाज दो हम एक हैंः.गोपाल सिंह नेपाली की लिखी ःभारत से तुम्हे प्यार है बन्दूक उठा लो.इन चीनी लूटेरों को हिमालय से निकालोः तक।कैप्टन साहब का कहाःजिस देश के जवानों को अपने सिविलियन नवजवानों का साथ मिल जाय.वो चीन तो क्या अमेरिका जैसे देशों को लोहे की चना चबबा सकता हैः हवा मे अभीं तक गूँज रहा था।जब भाषणबाजी का प्रोग्राम समाप्ति पर आया.तब सारे मेहमान गोदाम के पीछे शामियाने की तरफ नाश्ते की मेज की ओर बढे।बाहर खड़ी सारी जनता भी पीछे की ओर भागी।ऐसा लगता था.जैसे वो इन मिठाईयों को अपने जीवन मे पहली बार देख रहे हों।खाने की सुगन्ध पाकर क्लर्कस कॉलनी के कुछ सड़की आवारा कुत्ते भी वहॉ आ जमे थे।

बड़ी नफासत से आये मेहमान एकाध कुछ अपनी प्लेटों मे डाल कर कूतरे जा रहे थे।मनभरे लोग थे।अगर बाहर खड़ी भींड़ को अन्दर आने को मिल जाता.तो एक पलक भी नही लगता और वो टेबल कुर्सी सहित सब कुछ सफाचट कर जाते।

इस गोदाम को घेरे जो गोलाईदार सड़क थी.वो गाड़ियो और जीपों से खचाखच भरी हुई थी।सब गाड़ियों के अपने अपने ड्राइवर थे।इन्हे भी गेलार्ड के बेयरे सफेद ठोंगो मे नाश्ते भर कर दे आये थे।भींड़ अभी भी नियंत्रित अपनी जगहों पर खड़ी थी।डी एम साहब की वजह से सुरक्षा का पूरा इन्तजाम था।फिर छावनी की बात थी।सर फिरे फौजियों को अपनी पिस्तौलों की सेफ्टीकेज खोलने मे समय थोड़े ही लगता है।

दो बजे के आस पास आये मेहमानो ने जाना शुरू कर दिया।देखते ही देखते गोदाम का अहाता खाली हो गया।गाड़ियॉ अपने अपने घरों की ओर दौड़ पड़ीं।

नाश्ते का अभी भी काफी सामान बच गया था।इसका एक हिस्सा रख कर बाकी फैन्सिंग पर खड़ी भींड़ को दिया नही गया.बल्कि उन पर फिंकवा दिया गया।वहॉ एक लूट सी मच गई थी।इन्सानों और कुत्तों मे जैसे कोई फर्क ही नही रह गया था।पैरों से कूचले समोसे और मिठाईयॉ भी वो अपनी कमीजों से पोंछ पोंछ कर खा रहे थे।

इसी अहाते मे आज के दिन ही रात के दस बजे मेहरूनिसा का मुजरा होने वाला था।ठीक नौ बजे स्कूल ऑफ माईन्स के मेन गेट से एक काली एम्बैसडर परिशर मे आई और पोस्टऑफिस वाले रोड से होते हुए फिर बॉई ओर मुड़ी।गाड़ी के सारे सीसे ऊपर तक चढे हुए थे।इस गाड़ी के पीछे एक मिलिट्री जीप भी दौड़ रही थी जिसे एक हवलदार चला रहा था।उसकी बगल मे थ्री नाट थ्री सम्हाले सूबेदार लक्ष्मी नरायन सिंह बैठे हुए थे।जीप की पिछली सीटों पर भी दो हवलदार बैठे हुए थे।एन सी सी ऑफिस के गेट के ठीक सामने एम्बैसडर जा रूकी।पहले उतरे सेकेन्ड लेफ्टिनेन्ट तिवारी और और फिर उतरीं मेहरूनिसा।सिल्क की गाढें नीले रंग की साड़ी.इसी रंग की ब्लाउज बीच से काढा मांग.नितम्ब तक लहराती चोटी.चोटी मे गूँथे सफेद गजरे.जमी भींड़ को तो जैसे सॉप सूँघ गया था।उनके आने से पहले ही आधा धनबाद वहॉ आ जुटा था।इस गोदाम को घेरने वाली सड़क पर तील तक रखने की जगह नही बची थी।बिस्तर तोशक तकिया चारपाईयॉ तक वहॉ

बिछ चुकी थीं।आस पास के क्वार्टरों की छत पर भी लोग आ जमे थे।एक तरह से देखा जाय.तो धनबाद शहर के लिए इस तरह का मूजरा एक बिल्कुल नई बात थी।इस मवाली शहर मे बाईयॉ भूल से भी नाच गाने का सट्टा नही करती थीं।कई बार तो यहॉ के मवाली उन्हे स्टेजों पर चढने तक नही दिये।उन्हे उठा के न जाने कहॉ ले भागे।पर इस बार उनका सामना फौजियों से हुआ था।सारे आमंत्रित मेहमान आ चुके थे।बदनामी के डर से धनबाद के डी एम साहब या फिर स्कूल ऑफ माईन्स के निदेशक जैसे मेहमान नही आये थे।हमारे पिताजी भी वहॉ नही गये थे।मै झूठ झाठ बोल कर समय से जाके भींड़ मे शामिल हो गया था।शाम की पार्टी थी।दारू बीयर इत्यादि का उचित इन्तजाम था।कोई बलवा न हो जाये.इसके डर से लेफ्टिनेन्ट साहब धनबाद की कोतवाली से कई थ्री नॉट थ्री भी मॅगवा कर रख लिये थे।अपने माऊसर का सेफ्टी केज भी उन्होने खोल रखा था।शामियाने के बीचो बीच एक गोल से घेरे मे रात के ठीक दस बजे बाईजी का आगमन हुआ।प्रखर सीटियों की आवाजों से कईयों के तो कान के पर्दे तक फटने को आये थे।कई मेहमान तो बाईजी के सम्मान मे खड़े भी हो गये।बाईजी को तीन साजों की संगत मिलनी थी।हारमोनियम की संगत मे अपनी पहली तान छेंड़ते और कैप्टन साहब को सम्बोधित करती हुई वो उठीःमरलस करेजवा पर तिरछी नजरियाःहाय हाय मच गई।कई तो मूर्छित होने को आये थे।जीओ जीओ के कोलाहलों में उन्हे कई बार इस एक पंक्ति को दुहराना पड़ गया ःनजरिया हो हमरा के बड़ा दुख देलाःपर नजाकत से अपनी कमर हल्के से हिलाई तो चारो तरफ एक भूचाल सा आ गया।जितनी सधी उनकी आवाज थी.उतने ही सधे उनके कदम भी थे।उन्हे रूप और काया भी सीधे रति से विरासत मे मिला हुआ था।उन पर रूपयों पैसों की बारिश हो रही थी.जिसकी उन्हे कोई परवाह नही थी।अन्तरालों मे सारंगीवदक या फिर दूसरे ही जा कर उन्हे बटोर लाते थे।तमाम आमंत्रणों के बाद भी वो किसी मेहमान के समीप नही जाती थीं।उनके मैने बस दो ही गाने।उनका दूसरा गाना कुछ इस तरह का थाःहम जनम भर केहू के मनावत रहीं.केहू माने न माने त हम का करीं।आसरा मेःःसारे दर्शक झूम रहे थे।ललाट पर आये पसीने की बूॅदों को जब पोंछने के लिए पहली बार वो अपने कमर मे खोंसे ऑचल को निकालने को हुई.तो न जाने कितने इत्रो मे डूबे रूमाल उनके कदमों पर फेके गये।दोनो ही गाने श्रृंगाररस के होते हुए भी अश्लील नही कहे जा सकते थे।अपनी नजरें वो कैप्टन साहब के चेहरे पर ही रखती थीं।कई मेहमान तो कैप्टन साहब से यहॉ तक कह बैठे थेःकैप्टन सिंह!!ये तो आपकी दीवानी लगती है।हमारी तरफ तो देखती तक नही है।

मै गई रात तक बैठा बस मेहरूनिसा के बारे मे ही सोचता रहा।इस तरह के असुरक्षित पेशे मे उनके जैसी लड़कियॉ कैसे आ जाती है!शाहजहॉपुर जैसे बदनाम इलाके मे वो किसके बूते पर रह लेती हैं!कैप्टन लल्लन सिंह से उनके किस तरह के सम्बन्ध हैं!क्या वो उन्हे पहले से जानती हैं!

दूसरे दिन मुझे अपने एक दोस्त से पता चला कि मेहरूनिसा का मूजरा कैप्टन साहब ने रात दो बजे रूकवा दिया।एकाध मेहमान पी पाकर कुछ ज्यादे ही आऊट हो गये थे।एक ठिकेदार से तो कैप्टन साहब का झगड़ा तक हो गया था।वो नशे मे मेहरूनिसा की बोलियॉ तक लगाने लगा था।और भी कई दूसरे मेहमान ओंछी हरकतों पर आ गये थे।मेहरूनिसा को लेकर कैप्टन साहब अपनी कोठी पर आ गये।दूसरे वादकों को धनबाद स्टेशन से चलने वाली सुबह की किसी गाड़ी मे बिठवा दिया गया।

पूरे धनबाद मे ये खबर बिजली की तरह फैल गई कि मेहरूनिसा और कैप्टन साहब के पुराने सम्बन्ध हैं.पर उन्हे रखैल कहने की हिम्मत अपरोक्ष भी किसी के पास नही थी।एक ही मुलाकात मे धनबाद के एस पी रणविजय सिंह उनके परम मित्र बन चले थे।पिताजी ने इसे सहज लिया और मॉ को बस यही बताया कि सिर्फ सुरक्षा के लिए लल्लन उसे अपने घर लिवा गया है भई।

धईया मे हमलोगों का आना जाना वर्जित था.फिर भी न जाने क्यों मै एक बार मेहरूनिसा से मिलना चाहता था।मै ये भी देखना चाहता था कि ये एक दूसरे के कितने समीप और दूर है!

जब मॉ से पूछा कि थोड़ी देर के लिए लल्लू चाचा से मिलने जाऊॅ तो वो एक दम से बिफर पड़ीःनही!यहॉ आयें तो पैर बैर छू लेना।उनके यहॉ जाने की कोई जरूरत नही है।जब एक बार मॉ ना कह देती थी.तब दुबारा उनसे हॉ नही करवाया जा सकता था।

भाग्यवश शाम को रावत साहब सपत्नी हमारे घर आये।मै पीछे बगान वाली दीवार लॉघा और अन्धेरे मे ही पुटूस की कॅटीली झाड़ियों के खरोंच खाता ताराचन्द की दुकान के सामने आया।सॉपो और बिच्छूओं का भी मुझे भय न था।अब वहॉ से कम्पाऊन्डर साहब की कोठी कुछ ज्यादे दूर नही थी।सड़क से इस कोठी तक एक पक्का रास्ता गया हुआ था।इस रास्ते के दोनो ओर लगभग दो मीटर ऊॅची दीवारें बनी हुई थी।धूप्प ॲधेरा छाया हुआ था.पर सामने के घिरे बरामदे मे दो चार लोग बैठे ताश खेल रहे थे।ऊपर वाली मंजिल के सामने वाले कमरों मे भी रौशनी ही रौशनी थी।बरामदे पर चढ कर मैने खिड़की पर हल्की सी दस्तक दी।कमरे मे तो जैसे एक सन्नाटा सा छा गया था।चारो हवलदार इकट्ठे बाहर आये।सबके हॉथों मे तीन बैटरियों वाला टार्च था.जिसकी समवेत रोशनी मेरे चेहरे पर पड़ रही थी।मुझे सभी ने पहचान लिया

ःअरे!ये तो सिंह साहब का लड़का है।इतनी शाम गये क्यों आये!हम तो बिल्कुल घबरा गये थे।

ःमुझे चाचाजी से मिलना है।आप मे से कोई जा कर उन्हे बता दें कि प्रमोद आया हुआ है।

ःअभीं बताते हैं.कहते हुए एक हवलदार कोठी के पीछे की ओर चल पड़ा।

दो चार मिनट ही गुजरे होंगे कि मेजर साहब अपनी खुली छत पर आये और वहीं से आवाज लगायेःऊपर आओ न प्रमोद!सीढियॉ पीछे की तरफ हैं।

मै सीढियों की ओर बढ चला।

मेजर साहब सीढियों पर ही मिल गये।पैर छूने को हुआ.तो गले लगा लिए।

ःकैसे आये!मुझसे कोई काम है क्या!

ःबस!ऐसे ही आ गया।आपके मेहमान से मिलना चाहता था।एक दोस्त बता रहा था कि कल रात को आप उन्हे अपने यहॉ लिवा लाये थे।

लल्लू चाचा की पेशानी पर एक बल तक नही पड़ा।हॉथ थामे अपने ड्राईन्गरूम मे लिवा गये।एक सोफे पर शायद मेजर साहब का ही कुर्त्ता पैजामा पहने कन्धे पर एक शाल डाले मेहरूनिसा बैठी मिली।मुझे देखते ही उठ खड़ी हुई।बढ कर उनका पैर छूना चाहा.तो रोक कर मेरा सर सहलाते हुए आर्शीवाद दींःखुश रहो बाबू।

उनका कहा ये बाबू शब्द मुझे बड़ा आत्मीय लगा।

ःमेहरू!ये तुमसे मिलने आया है।पास वाले धईया गेट पर मेरे जो भईया रहते हैं न!उन्ही का बेटा है।

अच्छा अच्छा!पास आओ न!कहके अपने बगल मे बिठा कर मेरा हाल चाल पूछने लगीं।पिताजी और मॉ के बारे मे उन्हे मेजर साहब पहले से ही बता चुके थे।कहीं से मुझे न तो वो और न ही मेजर साहब ही मेरे आने की वजह से असहज दिखे।मेजर साहब ही मेरे लिए फ्रीज से ठंढी मैनगो जूस निकाल लाये और एक ग्लास मे ढालते हुए पूछेःशाम के खाने पर रूकोगे न!

ःफिर कभीं चाचाजी।देर से लौटूॅगा.तो मॉ डॉटेंगी।

ःपर उन्हे बता कर यहॉ आये हो न!

ःनही।पूछा था. पर मना कर दीं।आप तो जानते ही हैं जब एक बार वो ना कर देती हैं तो फिर उनसे हॉ नही करवाया जा सकता।न जाने किस वजह से उन्हे धई या से इतनी घबराहट होती है!

मुझे एक पल के लिए भी इस बात का एहसास नही हुआ कि मै किसी गैर के घर बैठा हूॅ।इस शाम जानने को तो मै बहुत कुछ जानना चाहता था. पर पूछने की हिम्मत नही हुई।हॉ इतना अवश्य पता चला कि मेहरूनिसा मेजर साहब की सिर्फ मेहमान ही नही हैं।जब तक वहॉ रहा. अपने ही बारे मे बताता रहा।

चलो कोई तो है लल्लू चाचा की एकाकी बॉटने वाला. ये सोचते ही मेरा मन हल्का होने को आता था।

आज के दिन भी ये शाम मेरे जीवन के स्निग्ध शामों मे से एक है।अपना और उनके कहे एक एक शब्द मेरे हृदय पर आज तक अंकित हैं।

दूसरे दिन लल्लू चाचा हमे अपने घर शाम के खाने पर बुलाने आये।मॉ ने उन्हे दो टूक सुना दियाःःजाके पहले विवाह तो करो।घर बसाओ. फिर न्यौता देने आना।अपने हवलदारों का बना खाना खिलाओगे क्या!तुम्हारी मेहमान चली गई या अभी तक तुम्हारे ही घर टिकी हुई हैं!खुब नाम रौशन कर रहे हो षडबदन सिंह का!

कैप्टन साहब चुप हो गये!इसी मे उन्होने अपनी भलाई समझी।मेरी मॉ का उघटना पैचना वो अच्छी तरह जानते थे।

सन पैसठ की युद्ध मे कैप्टन साहब को फिर से दुबारा वीर चक्र तो नही मिला. पर उन्हे मेजर बना दिया गया।करमजली का ये सपूत तो सितारों पर अपनी कमाने रखे बैठा था।सन चौहत्तर मे न जाने क्यों मेजर साहब ने रेजिमेन्ट बदल लिया।राजपूत रेजिमेन्ट बदल कर वो सिक्ख रेजिमेन्ट मे आ गये।पटियाला मे उनकी पोस्टिंग चल रही थी।

मेजर साहब की लाश की अगवानी मे मुगलसराय मे भी सैकड़ों लोग खड़े मिले।रोते कलपते भींड़ मे शामिल हो गये।बनारस चौक तक मेजर साहब की लाश के पीछे लाखों लोगों का मजमा आ जमा था।जिसे देखो. वही दूसरे से पूछने लग पड़ता थाःअरे!कहॉ क महातमा गुजर गईलॅ भईया!हाय रे दईया कहके औरतें बिलखने लगती थीं।

उनकी मुखाग्नि अम्बरीश चाचा से करवाई गई।रह रह कर मेरे दिमाग मे मेहरूनिसा का नाम गूॅजने लगता था।पता नही चाचा के गुजरने की खबर उन्हे मिल पाई अथवा नही!रह रह कर मुझे उनके आस पास ही होने का अन्देशा होता था।तत्काल मै जमी भींड़ मे उन्हे ढूॅढने लग पड़ता था।मेजर साहब के अकस्मात गुजर जाने का दुःख किसे नही था. पर जब मै उनके बारे मे सोचता था. तब कलेजा मुॅह को आता था।

दरअसल यहॉ मै अपनी यादों मे उनका नही लेना चाहता था. परन्तु बड़ी मजबूरी मे ले रहा हूॅ।कई बार मै उन्हे अलग अलग नामों से याद करना चाहा पर न जाने कहॉ कहॉ भटक गया।ये न तो उनके प्रति न्याय था और न तो मेरी यादों को किसी प्रकार की संतुष्टि ही मिल पाती थी।

उनका पूरा नाम लल्लन सिंह था।हम उन्हे लल्लू चाचा कहके बुलाया करते थे।हमारी तरह वो बढवलिया नही थे. पर जाति के क्षत्रिय थे।भोजापुर मे नही भी तो छ सात पीढियों से उनका परिवार रह रहा है।भोजापुर गॉव के ठीक मध्य मे बढवलियों के चार विस्तृत परिवार रहते हैं।इन चारों परिवारों मे आज के दिन भी एक ही कुॅए का पानी जाता है।यहॉ तक कि ये एक ही नीम पेंड़ के दतवन आज तक चुभलाते हैं।जमीन जायदाद बॅट गये पर आज तक न तो ये कुॅआ बॅटा और न ही ये नीम का बरगदनुमा पेंड़ ही।इस नीम के पेंड़ के नीचे बईठका के नाम पर हमारे चाचा एक झुग्गी बनवा रखे हैं।गिरधर बाबा की एक बॅसहटी भी सदैव इसी के नीचे बिछी रहती है।उनके घर के सामने से जाने वाला सॅकरा रास्ता बॉई ओर रामजन्मसिंह के घर की ओर और दॉई तरफ और सॅकरा होते हुए लल्लू चाचा के बईठके की ओर जाया करता है।एक अधकच्ची पुश्तैनी मकान के दो हिस्से हो चुके हैं. पर इनकी बईठका समवेत है।एक लाईन से न जाने कितनी बॅसहठियॉ वहॉ बिछी रहती हैं।परिवार के एक अर्द्धांश के दो भाई फिर से दुबारा बॅटवारा कर लिये हैं।इनमे से एक भाई मूसन सिंह हमारे चाचा के निकटतम मित्रों मे से एक हैं।बिना नागा के हर दिन शाम को हुक्का पीने आ जाते हैं।बाद के दिनो मे दारू बारू भी छनने लगी थी।परिवार के दूसरे अर्द्धांश मे बाबू षडबदन सिंह और सुनयनी के तीन बेटे हैं।लल्लन सिंह. जमुना सिंह और अम्बरीश सिंह।लल्लन सिंह सेना मे सकेन्ड लेफ्टिनेन्ट थे।जमुना सिंह खेती करवाते थे और अम्बरीश सिंह यू पी कॉलेज से इन्टर कर रहे थे।अपने चचेरे भाईयों की तुलना मे ये तीनो भाई गौर वर्ण के थे और पूरे गॉव के सुदर्शनो मे गिने जाते थे।छुट्टियों मे लल्लू चाचा भोजापुर अपनी वर्दी मे ही आते थे।रियाजी कसा बदन. ऊॅची कद. सीने पर टॅके सितारे. चमचम करती उनके बेल्ट के बकल और दूसरे तगमे. हॉथ मे एक छोटी सी काली रूल. खेतो मे काम करती चमारों कॅहारों की पत्नियों और उनकी जवान बेटियों का दिल सीना फाड़ कर उनके कदमों मे लोट जाने को बिखर जाता था।उनके एक हॉथ मे एक काली अॅटैची भी हुआ करती थी. जिसे वो हवा मे लहराते उछालते रहते थे।रास्ते मे उन्हे जो भी बड़े बुजुर्ग मिलते थे. बेलाग उनके चरण छूते थे।उनकी मॉ को भोजापुर ने एक उपनाम दे रखा थाःकरमजलीःअपने सुदर्शन बेटों को वो जवान होते न देख पाई।जब लल्लू चाचा तेरह वर्ष के थे. तो हैजा से उनका देहान्त हो गया।आज अगर वो जिन्दा होंती. और अपने सपूतों को देखती. तो निहाल हो जातीं।बेचारी करमजली जो थी।

लल्लू चाचा सिर्फ अपनी कमीज ही उतार पाते थे।एकाध बताशा मुॅह मे डाल कर पूरे गॉव का मुवायना करने निकल पड़ते थे।सैन्डो बनियाईन. कन्धे पर मिलिट्री का ही एक हरा तौलिया डाले चमरान. कम्हरान. खट्टिकटोली सबका चक्कर मार आते थे।

उन्हे भोजापुर का जेता कहा जाता था।वो न्याय अन्याय को परे रख कर सदैव अशक्तों का साथ देते थे।

हमारे गॉव मे कॅहारों के कई परिवार रहते हैं।इनका मुख्य पेशा लोगों के घरों मे पानी देना होता है।इन्ही मे से एक का नाम सोहन था।हमारे घर वही पानी भरा करता था।उसकी पत्नी को गॉव के बड़े बूढे जवान बच्चे यहॉ तक कि औरतें भी भऊजी कहके बुलाती थीं।एकमत से वो भोजापुर की सबसे सुन्दर स्त्री मानी जाती थी।बच्चों और औरतों के अलावे वो सबके सामने घूॅघट करती थी।विवाह को आठ वर्ष होने को आये थे. पर बच्चे बच्चे नही हुए थे।सोहन को तो गॉव वाले जनखा तक कहने लगे थे।एक शीतलहरी मे सोहन को लकवा मार गया।उसके शरीर का दाहिना भाग बिल्कुल सुन्न हो गया।साल भर उसका इलाज चला।सकलडीहा का एक फर्जी डाक्टर दवा के नाम पर भऊजी से डट कर पैसे खाया।अब भऊजी ही पानी भरने का काम करने लगीं।हॉथ पैर से वो बड़ी नाजुक थी।सुबह के छ भी नही बजे होते थे और वो पानी खीचने वाली रस्सी की कुंडली अपने कन्धे पर डाले इनार की तरफ आती दिखती थीं।हमारे इनार का पानी बरसात के दिनो मे भी पाताल छूता होता था।मिनटों लग जाते थे. बाल्टी को सतह पर आने मे।घूॅघट काढे भऊजी बाल्टी पर बाल्टी का पानी हमारे और मास्टर साहब के परिवार मे ढोती रहती थीं।मेरे चाचा से ये सब न देखा गया।वो भी उम्र मे बड़े होने के बावजूद उन्हे भऊजी ही कहके बुलाते थे।यदा कदा मस्ती मे उनसे मजाक भी कर लेते थे।भऊजी को ऑगन मे बुलवा भेजेःक्यों तुम नाहक अपनी जवानी का सत्यानाश कर रही हो!बन ठन कर रहा करो।गॉव की जवानी बरकरार रहेगी।दो ही प्राणी तो हैं तुम्हारे परिवार मे।साल भर का गल्ला आकर प्रदीप की मॉ से ले लिया करो।ऑगन मे चाची के संग मै भी वहॉ बैठा हुआ था।मन ही मन उन्हे दाद देने लगा।मेरे चाचा भृगवंश अर्थात बढवलियों के सबसे चमकते सितारे थे।

हमारे घर का पानी एक दूसरा कॅहार भरने लगा. परन्तु मास्टर साहब के परिवार के चन्द्रभूषण सिंह के घर मे भऊजी का पानी भरना नही रूका।सैकड़ों बाल्टी पानी उनके घर मे जाता था।उनकी पत्नी एक नम्बर की काली माई थीं।बीसों बाल्टियों से नहाती थीं।अपना मैल नही छुड़ाती थीं. अपना काला रंग खुरचती

थीं।चन्द्रभूषण सिंह भी नजर के बड़े मैले माने जाते थे।भऊजी ने उनसे दो हजार रूपये सोहन की बीमारी मे लिये थे.जिसका अनाप शनाप सूद पोखरियों के जलकूंभियों की तरह बढता जा रहा था।अपनी बीमारी मे भी उन्हे इनार की जगत पर चढना पड़ता था।सुबह उनके आने से पहले ही चन्द्रभूषण सिंह नीम का एक दतवन चुभलाते इनार की जगत पर बैठ जाते थे।भऊजी का घूँघट हल्का सा क्या हटा कि उनका दिन तर जाता था।दोपहर को भी वो चना चबेना लेकर इनार पर आ जाते थे।हमारी तरह वो भी बढवलिया थे।हमारे खानदान से ही थे।जर जमीन बॉट बूँट लेने के बावजूद बढवलिया भोजापुर मे बड़े संगठित रहते थे।चन्द्रभूषण सिंह के धर पकड़ के न जाने कितने किस्से जग उजागर थे!उनके ढाई बिघ्घे की खेती मे गॉव की शायद ही कोई जवान चमाईन काम करने जाती होगी।ग्वालों की पत्नियॅा और बेटियॅा घास निकियाने उनके खेतो मे क्या.उनके मेढों तक पर नही चढती थीं।ये पापी भऊजी के इर्द गिर्द अहर्निश मॅडराता फिरता था और अकारण बेचारे सोहन को गरियाता रहता था।घर खानदान की वजह से मेरे चाचा बीच मे नही पड़ना चाहते थे।
एक दिन भऊजी की तबीयत कुछ ज्यादे ही खराब हो गई।वो पानी भरने न आई।चन्द्रभूषण की पत्नी खॉची भर कपड़े धोने बैंठी और भऊजी का कहीं पता ही नही।चन्द्रभूषण सिंह सोहन के घर जा धमके और लगे उसकी मॉ बहन करने।किसी तरह खटिये की पाटी थाम कर भऊजी उठीं
ःठकूराई!ज्वर से हॉथ पैर बिल्कुल ठंढा गईल ह।पानी ना खींच पाईब।एकाध दिन सबुर कई लीं।तबीयत ठीक होते सेवा मे हाजिर हो जाईब।
चन्द्रभूषण भभकेः तब निकालो मेरा दो हजार रूपया मूल का और सात सौ सूद का तत्काल।
ःबाबू साहब!कहॉ से ले आई एतना पईसा!उहो तत्काल!
ःजहॉ से भी।मरवा के चोःःःवा के।घर बगान बेच के।तत्काल।
आधा गॉव सोहन के घर के सामने जा जमा था।अब लल्लू चाचा आगे बढे
ःभईया!आप का कितना पैसा भऊजी पर बनता है!
ःदो हजार हजार सात सौ।
ःठीक है।अपने भाई अम्बरीश को घर जाकर अटैची से अपना बटुआ लाने को कहे।
खड़े खड़े दो हजार सात सौ रूपये चन्द्रभूषण के मुँह पर दे मारे।इतना ही नही.एक हजार रूपये भऊजी को देते हुए कहेःबेचन भैया ठीक ही कहे थेःकॉहे अपने जवानी क नाहक सत्यानाश करत हऊ!बन ठन के रहल करा।भोजापुर क जवानी बनल रही।इ पईसन से सामने वाले कमरवा मे एक ठे दुकान डाल ला।
भऊजी को अपने घूँघट तक का ख्याल नही रहा।लल्लू चाचा का पैर थाम कर रोने लग पड़ींःएक ठे देवर लखन लाल जी रहलॅ।सीता माई के मिललॅ।दूसर आप हॅई.हमरे जईसन अभागिन के किसमत मे रामजी लिख गईलॅ।
भऊजी की तरह भोजापुर मे न जाने कितनो की मदद लल्लू चाचा ने की थी।गॉव के नवयुवक मंगल दल का गठन भी वही किये थे।नहर से जो रास्ता बगईचा वाले खलिहान से होते हुए सीधे गॉव आता है.उस पर मिट्टी फिकवाने का काम लल्लन चाचा ने ही नवयुवक मंगल दल के सहयोग से करवाया था।बाद मे उस पर सरकारी पैसों से गिट्टियॅा पड़ी।अब तो इसी रास्ते गाड़ी मोटर भी सीधे गॉव मे आने लगी थी।
वो छत्तीस वर्ष के हो चले थे और अभी भी अविवाहित थे।कौन उन पर विवाह का दबाव डालता!जो डाल सकता था.वो उनकी मॉ थीं।उनके विवाहित होने का सुख भी उनकी मॉ की किस्मत मे नही बदा था।बेचारी करमजली जो थीं।
अपने भाईयों से वो सदैव यही कहा करते थेःहमारे चरित्र की सबसे शैतानी मॉग बस ये है कि हम सबसे ऊँचे बने रहें और दूसरे हमारे तलवे चाटें।एक दूसरे पर हमारी हूकूमत करने का शौक न सिर्फ आज के दिनो मे.बल्कि आने वाले तमाम सदियों मे हमारा सबसे जहरीला शौक साबित होके रहेगा।बढवलियों की तरह उठो बढो और लूट लो से परिवार नही चलता।एक परिवार हमारी अर्कमण्यता और निष्कामता से भी नही चल सकता।तुमलोगों के पास इतना तो होना ही चाहिये कि तुम अपना और अपने परिवार और अपने मेहमान का पेट पाल सको।भोजापुर मे तुम मास्टर साहब की तरह एक हवेली बनाओ.कबीर चाचा की तरह दालान मे दरबार लगा कर दारू पीओ.महीजीत भईया की तरह दिशा मैदान करने भी एम्बेसडर गाड़ी से जाओ.इन बातों के लिए मेरे पास तुम लोगों के लिए पैसे नही है।
अपने बईठके मे लल्लन चाचा मात्र सोने जाते थे।उनका खरमिटाव और दोपहर शाम का खाना दूसरों के ही घर पर होता था।जहॉ देखों वहीं बैठ जाते थे।जात पात और ऊँच नीच का दुर्भाव तो उन्हे दूर से भी नही छूआ था।चमारों.कॅहारों के घर भी बैठ जाते थे।शादी व्याहों मे एक हजार एक रूपये का नेग वो सीधे जा कर लड़की की हॉथों पर धर आते थे और उन्हे अपना हार्दिक आर्शीवाद कह आते थे।विदाई के दिन रोते कलपते काली माई की चबूतरा तक दुल्हन को पहुॅचाने भी जाते थे।
वो बालीबाल के भी बड़े उत्तम खिलाड़ी थे।उनकी बाली रोकने मे तो कईयों के पंखुरे तक कबर गये थे।
अब आया वो निर्णायक पल!
अब देखें कि जमुना और अम्बरीश के हिस्से मेजर साहब का छोड़ा क्या क्या आता है!मिलिट्री मे तो सब कुछ फ्री मे ही मिलता है।सारी तनखाह बस चपोत कर रखी जाती है।लल्लू चाचा की तेरही के बाद ही दोनो भाई पटियाला की राह पकड़े।सरकारी खर्चे पर तीन ट्रकों मे मेजर साहब का एक एक सामान भोजापुर आया और साथ मे मुँह लटकाये उनके दोनो भाई वापस आये।वो लाखों का सपना लिये पटियाला गये थे.पर उनके हॉथ लगा मात्र बीस हजार रूपया।इससे ज्यादे तो वो मेजर साहब की तेरही पर लगा चुके थे।
कहॉ गया मेजर साहब का सारा पैसा!कहॉ बॉट डाले वो सब!ये जानने आये दिन गॉव के लोग जमुना सिंह की बईठका पर जा जमते थे।
ःकवनो पतुरिया त ना पलले रहलॅ!कवनो विधवा मुसम्मात के त ना कूल बॉट देलॅ!मन्दिर मस्जिद के नाम पर कवनो ट्रस्टी त ना हॅथिया लेलस!मिलिट्री मे भी कूल चोर उचक्का बसे लॅ।कवनो दारू सारू पिया के उनसे साईन त ना करवा लेलस!जितनी मुँह.उतनी बातें।मेजर साहब की मौत की क्षति भूल कर भोजापुर न जाने किन किन अटकलबाजियों से जा उलझा था।मेहरूनिसा का नाम प्रकाश मे नही आ पाया।मॉ से बाबूजी मुँह न खोलने की कसम ले चुके थे।मेरे मुँह खोलने का सवाल ही कहॉ पैदा होता था!
ःलल्लन जी मेरे नाम से एक लाख रूपये का लाईफ इन्श्योरेन्स करवा रखे थे बाबू।उनके गुजरने के बाद ये रूपये मुझे ही मिले।अपने जीते जी जब भी वो मुझसे मिलने कलकत्ता आते थे.अपना पर्स ही मुझे पकड़ा जाते थे।उन्ही के पैसों से मैने इस गॉव मे कुछ जमीने खरीदीं और इस मकान का मरम्मत करवाया।एक अमरूदों का बाग भी हमारे पास है।सामने वाले कमरे मे जो मुंशी जी रहते हैं न!वही जमीन जायदाद की देखभाल करते है।इसी मुहल्ले की दो अनाथ लड़कियॅा मेरे साथ रहती हैं।सो रही हैं।जग जायेंगी.तब तुमसे मिलवाऊॅगी।खाने पीने रहने और सर ढॅकने के लिए मुझे बहुत कुछ दे गये तुम्हारे चाचा जी।
ःऔर आपका अपना पेशा!
ःउनके जाने के बाद हिम्मत ही नही रही।न पैर उठते हैं और न गला फूटता है।अब इस बेवा से ये सब कैसे हो सकेगा बाबू!

ःचाचा के गुजरने की खबर आपको कैसे मिली!
ःअखबारों से बेटा।उनके काम पर बनारस आई थी।वहॉ तुम्हे भी देखा था।पास आने की हिम्मत नही हुई।तुम्हे मेरी याद कैसे आई!
ःमै आपको भूला ही कब था!
ःमुझसे मिलने दुबारा कब आओगे!
ःकाश!ये मै आपको बता पाता!कुछ ही सप्ताहों मे मै विदेश चला जाऊँगा।फिर मेरे वश मे क्या रह जायेगा!

ग्यारह बजे मेरी ट्रेन थी।मुझे धनबाद वापस लौटना था।खाने की मेज न जाने किन किन पकवानों से भर चली थी।उनकी तरफ मुझसे देखा तक नही जा रहा था।मेहरूनिसा की दोनो लड़कियॉ कमरे के पर्दे को मरोड़े उसके पीछे छिपी खड़ी थी।मुंशीजी एक रिकसा बुलवा लाये थे।न जाने वो रिकसेवाले को कौन कौन सी हिदायतें दिये जा रहे थे।हॉथों मे थामे चाय का गिलास न जाने कब का ठंढा हो चला था।

मेरे उठने से पहले मेहरूनिसा उठ कर मेरे हॉथों मे ये कहके न जाने कितने रूपये थमा गई थीं!ःबाहर के देशों मे बड़ी ठंढ पड़ती है।मेरे नाम की एक स्वेटर जरूर खरीद लेना बेटा।मुझे भूल तो नही जाओगे!

रूपयों को अपनी जेब मे डाल कर उनके पैर छूने से पहले उन्हे फिर से समेट कर गले लगाया।उनका पैर छू कर सर झुकाये बरामदा पार करके रिकसे पर जा बैठा।पलट कर दुबारा उन्हे देखने की हिम्मत ही नही हुईः

प्रमोद कुमार सिंह
बर्लिन तेईस जनवरी दो हजार ग्यारह।